Subject :- Knowledge Language & Curriculum

Topic :- मुखोपाध्याय पाठ्यक्रम प्रतिमान

मुखोपाध्याय ने भारतीय परिस्थितियों में इस प्रतिमान का विकास किया। यह प्रतिमान हिल्दा ताबा के प्रतिमान से मिलता-जुलता है। इसके अन्तर्गत व्यवहार परिवर्तन संबन्धी आँकड़ो को एकत्रित करके उनका अर्थापन किया जाता है। इस प्रतिमान के अन्तर्गत पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रियाओं को दो अवस्थाओं में विभाजित किया गया है। प्रथम अवस्था - में यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्यों, शिक्षण विधियों तथा संस्था के संसाधनों का छात्रों द्वारा कितना उपयोग किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के लिए आधार तथा स्रोतों को ज्ञात किया जाता है। द्वितीय अवस्था - में इनके आधार पर पाठ्यक्रम के प्रारूप में सुधार किया जाता है और उन सुधारों का निरीक्षण एवं मूल्यांकन उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से किया जाता है। इसके लिए आपदण्ड परीक्षण का प्रयोग किया जाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

=> मुखोपाध्याय पाठ्यक्रम प्रतिमान में निम्नलिखित पांच सोपानों का अनुसरण किया जाता है।

प्रथम सोपान के अन्तर्गत छात्रों की आवश्यकता एवं विकासक्रम तथा पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखकर, उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है।

द्वितीय सोपान में उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप में लिखा जाता है, जिससे उनका विशिष्टीकरण भी होता है। शिक्षक पाठ्यवस्तु से शैक्षिक क्रियाओं का सम्पादन करता है और सीखने की अपेक्षित परिस्थितियां पैदा करता है जिससे छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जाता है।

तृतीय सोपान में उन स्रोतों को ज्ञात किया जाता है जिनका उपयोग छात्र अपने अध्ययन में कर सकता है। संस्था के स्रोत में शिक्षकों की योग्यता को भी सम्मिलित किया जाता है।

चतुर्थ सोपान में उपरोक्त तथ्यों की जानकारी के आधार पर पाठ्यक्रम में सुधार तथा विकास किया जाता है। इसके बाद उसका निरन्तर निरीक्षण किया जाता है और उसकी प्रभावशीलता देखने के लिए मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन हेतु मानदण्ड परीक्षणों का भी प्रयोग किया जाता है।

पंचम में पाठ्यक्रम के प्रारूप में सुधार किया जाता है। वह कहाँ तक उपयोगी और सार्थक है, इसको देखा जाता है और पाठ्यक्रम का उद्देश्यकेन्द्रित मूल्यांकन किया जाता है।

Thank you

by
Mr. Parveen Tyagi
Asss. Pro.
B.R.C. Deoband (SRE)

Scanned with CamScanner